आदिवासी जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गांव के देवता'

प्रा.सारिका राजाराम कांबळे
के.एम.सी.कॉलेज, कोल्हापुर
मो. नं. 9158548358
Email –k.sarika9158@gmail.com

सारांश :

'ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास झारखंड में स्थित आदिवासी समाज, उसमें विशेष रूप से ' असुर' जाति तथा समुदाय को केंद्र में रखकर लिखा गया है | यह उपन्यास असुर जाति के प्रति सदियों से लोगों के मन में जो धारणाएं बनकर रह गई है उसे केवल खंडित ही नहीं करता है बल्कि इस समुदाय की बनी बनाई मान्यताओं के प्रति सोचने के लिए बाध्य करता है | प्रस्तुत शोध आलेख में असुर समाज का चित्रण किया हैं | जिसमें उनकी लोकसंस्कृति, खान-पान, रस्म-रिवाज, नारी की स्थिति एवं गति, व्यथा और त्रासदी को वाणी देने का प्रयास किया हैं |

बीज शब्द : आदिवासी, अस्तित्व, विस्थापन, शोषण, अत्याचार, संघर्ष की लढाई |

प्रस्तावना :

वर्तमान युग 'स्व' की खोज करना कहा जाए तो कुछ गलत साबित नहीं हो सक्त | स्वयं के खोज में मनुष्य अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए कई तरह का संघर्ष करता हुआ नजर आ रहा हैं | यह बात केवल मनुष्य तक सीमित न रहकर जन-जाति, समुदाय, समाज में दिन-ब –दिन विकसित होती जा रही है | इसीकारण हर एक समाज अपना अस्तित्व एवं अस्मिता बनाए रखने की कोशिश कर रहा है | इसमें आदिवासी समाज भी छूटा नहीं है | आदिवासी समाज को अपने वजूद को बरकरार रखने के लिए कई तरह से संघर्ष करना पड रहा हैं | इसी संघर्ष में वह अपनी जान गंवाने से भी पीछे नहीं हट रहे है | इसी बात को आधार बनाकर हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कलम के माध्यम से आदिवासी विमर्श पर लिखकर आदिवासियों के अस्मिता एवं संघर्ष आदि की ओर पाठकों का ध्यान केंद्रित किया हैं | जिसमें में सफल हुए हैं | संजीव, वीरेंद्र जैन,रणेंद्र जैसे लेखकों ने अपनी रचना के माध्यम से आदिवासी समाज की व्यथा, पीडा, त्रासदी को प्रस्तुत किया है |

'रणेंद्र' ने ' ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास के माध्यम से असुर जाति के विमर्श को यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है | 'असुर' शब्द सुनते ही हमारे मन मस्तिष्क में राक्षस का चित्र उभर कर सामने आता है | इसी धारणा को लेखक ने पूरीतरह से बदला है | प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने झारखंड के भौरापाट में स्थित असुर समाज का चित्रण किया है | इस संदर्भ में अरविंद कुमार उपाध्याय लिखते है- ''वैश्विकरण के दौर में व्यक्ति एक-दूसरे से आगे बढना चाहता है | इस आगे बढने की चाहत ने हजारों लाखों लोगों को जमींदोंज तो किया ही साथ ही उनके अस्तित्व पर सबसे बडा प्रश्न उभरकर सामने आय है | वैश्विकरण का तात्पर्य ही यही है कि अगर उसके साथ जो समाज नहीं चल सका, उसे वह मिटाकर रख देगा | रणेंद्र द्वारा लिखित चर्चित उपन्यास 'ग्लोबल गांव के देवता' वैश्विकरण के प्रभाव को आधार बनाकर लिखा गया है |''[1] प्रस्तुत उपन्यास में वैश्विकरण से उत्पन्न समस्याओं पर प्रकाश डाल देता है | असुर समाज के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष इसमें दिखाई देता है | असुर समाज के सभी स्त्री- पुरुष इकठ्ठा होकर अपने अस्तित्व को बचाने की कोशिश करते हुए दिखाई देते है | लेखक ने रुमझुम, ललिता, लालचन, डॉ. रामकुमार, एतवारी, बुधनी दी आदि पात्रों के माध्यम से असुर समाज पर हो रहे अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाते हुए दिखाया है |

रुमझुम पढा- लिखा युवक है वह सरकार द्वारा असुरों के बच्चों के लिए बनाए गए स्कूल में नौकरी करना चाहता है कई बार कोशिश करने पर भी उसे नौकरी नहीं मिल पाती है | वह अपने समाज पर हो रहे अन्याय- अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना चाहता है | रुमझुम लेखक को पाथरपाट का स्कूल दिखाने के लिए ले जाता है उस समय वह असुरों की व्यथा को स्पष्ट करते हुए कहता है-''असुर सुनते दो ही बातें ध्यान में आती है | एक तो बचपन में सुनी कहानियों वाले असुर, दैत्य, दानव और न जाने क्या-क्या ! वर्णन भी खूब भयंकर | दस- बारह फीट लंबे | दांत-वांत बाहर | हाथों में तरह –तरह के हथियार | नरभक्षी शिवभक्त- शक्तिशाली | किंतु अंत में मारे जानेवाले | सारे देवासुर संग्रामों का लास्ट सीन पहले से फिक्स्ड |''[2] यहां पर असुर के प्रति लोगों को धारणा तथा उनको अंत में मरणा ही होगा इस समझ को रुमझुम देवासुर संग्राम के माध्यम से स्पष्ट करता है | रुमझुम लेखक को असुर की सच्चाई बयान करता है |असुरों के बच्चों के लिए बनाए गए स्कूल में सच में कितने असुर बच्चे पढाई कर रहे है आदि बातों की स्पष्ट करता है | वह अपने समाज पर हो रहे अन्याय अत्याचार को देखकर काफी मायुस है, सरकार, बडी बडी कंपनियां तथा बाबा शिवदास जैसे लोग अपने मुनाफे के लिए अपने समाज का किस प्रकार इस्तमाल करते है इसके प्रति वह आक्रोश व्यक्त करता है |

छोटी- बडी कंपनियां बाक्साईट खदान के लिए दी गई जमीन से गैरकानूनन खदान करती है इस संदर्भ में लेखक कहते है- ''छोटे-बडे सभी खदान- मालिकों का एक ही रवैया | लीज की भूमि पर कम, वन- विभाग, गैरमजरुआ जमीन, असुर रैयत की जमीन से ज्यादा से ज्यादा खनन किया करते | अवैध खनन खुलेआम और वर्षों से जारी था | रुमझुम और लालचन दा घूम- घूमकर समझाना काम नहीं आता और न कलेक्टर- एस-पी को आवेदन लिखना |''[3] असुर लोगों की जमीन पर अवैध खनन रोकने के लिए कई बार रुमझुम और लालचन दा मिलकर कलेक्टर से दरखाव्स्त कर आते है लेकिन इसका असर कुछ नहीं होता है उलटा उन दोनों पर ही दबाव डाल देना शुरू हो जाता है | अपने समाज के अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए वह हमेशा कोशिश में लगे रहते है |

ललिता असुर समजा का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रमुख नारी पात्र है जो कि एम.ए. तक की पढाई कर चुकी है | ललिता असुर समाज की एकमात्र पढी-लिखी लडकी हैं | वह अपने समाज को बचाने के की लडाई में शामिल हो जाती है और लोगों में चेतना जागृत करने का काम करती है | सरकार द्वारा असुरों को दिया गया अनुदान की घोषणा सुनकर उसका आक्रोश उमडकर आता है | अपने समाज का सरकार तथा बडी कंपनियां द्वारा हो रहा शोषण के प्रति आवाज उठाती है | डॉ. रामकुमार असुरों की सेवा करने में ही अपना धर्म मानते है और किसी बडे शहर में जाकर नौकरी डॉक्टरी सेवा करने के बजाय भौंरापाट में असुरों लोगों का इलाज करते है | असुरों के संघर्ष में डॉ. अपना सहयोग देते है और अपने लोगों की सहायता करते है| अंत में पुलिस की एनकांउटर में डॉ. रामकुमार की मृत्यु हो जाती है | जमीन के साथ पाट के वैध- अवैध खनन से जुडे मामले में सभी असुर मिलकर बडी कंपनिओं से हो रहे अन्याय एवं अत्याचार का सामना करने का सोचकर खदानों से लेकर ऑफिस तक काम बंद करते है | खदानों में काम बंद हो जाता है तो कंपनियों की परेशानियां बढने लगती है तो यह लोग असुरों को सही गलत प्रलोभन देकर काम शुरू करना चाहते है परंतु यह लडाई को पुलिस द्वारा दबाने की कोशिश करते है और पुलिस असुर समाज पर हमला करते है- ''जब तक लोग कुछ समझते, रायफल निकालकर उसने भीड पर फायरिंग करनी शुरू कर दी | उसकी देखा-देखी दो और सिपाही रायफल लेकर चौकी से बाहर निकले थे | उनकी भी रायफलें मौत उगलने लगीं |

दूर से मुझे साफ दिख रहा था कि बालचन की देह खडी हुई, रायफल छीनने को झपटी और लहरा कर वहीं गिर गई |''[4] यहां पर बालचन अपने लोगों की सहायता करते समय मृत हो जाता है | आंदोलन को रोकने के लिए लोगों को डरा- धमकाने का काम पुलिस द्वारा किया जाता है | फिर भी यह लोग अपने अस्तित्व की लडाई के लिए अपने इरादे से टस से मस तक नहीं होते है | स्वार्थी नेता इस आंदोलन को अपने फायदे के लिए इस्तमाल करना चाहती है | अंत में ललिता तथा बुधनी दी कंपनियों से बातचीत करके असुरों के अस्तित्व के बारे में सोचते हुए कहते है कि ''तय यही हुआ कि भीड या जुलूस नहीं, बस पंद्रह-बीस लोग बात करने जाएंगे | सब बात दरख्वास्त में लिखी रहेगी | ज्यादा बहस नहीं करनी है | कोई झगडा- झंझट नहीं | केवल अपने मुआवजे-पुनर्वास की बात करनी है |''[5] जुलूस न निकालते हुए सिर्फ पंद्रह –बीस लोग शांति का रास्ता अपना कर आंदोलन को मिटाने की सोचते है परंतु उन लोगों की बीच रास्ते में ही लैंड माइंस के धमाके में मौत हो जाती है | अंत में असुर समाज के अस्तित्व की लडाई राजधानी के होस्टेल में पढाई करनेवाले सुनील असुर संभालता है |

यहां पर असुर समाज अपनी वर्तमान स्थिति एवं गति के बारे में सोचकर अपनी अस्मिता को जागृत कर अपने सुरक्षित जीवन के लिए संघर्ष करना शुरू करते है अपनी जान जोखिम में डालते हुए अपने समाज को सुरक्षित रखने का प्रयास करते है | प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने असुर समाज के साथ बिताई हुई घटनाओं का विवेचन कर उनकी अंधश्रद्धा, लोकजीवन, असुरों की व्यथा, उनके अस्तित्व की लडाई, बडे कंपनियों द्वारा होने वाला उनका शोषण आदि का विवेचन किया है |

संदर्भ सूची –

1. अरविंदकुमार उपाध्याय, www.umrjournal.com p. 94
2. रणेंद्र, ग्लोबल गांव के देवता पृ. क्र. 17
3. वहीं , पृ. क्र. 27
4. वहीं, पृ. क्र.87
5. वहीं, पृ. क्र.99